IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कुषाण शासकों के भारत आगमन मार्ग का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन

डॉ. शक्ति सक्सेना

सहायक आचार्य, इतिहास विभाग

वीरभूमि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महोबा, उत्तर प्रदेश

सारांश

इस शोध लेख में कुषाण शासकों के भारत आगमन के मार्ग का विश्लेषण समसामयिक परिप्रेक्ष्य में किया गया है। इसमें चीन से भारत की ओर आने वाले मार्गों तथा उनके प्रमुख प्रवास स्थलों को ऐतिहासिक एवं वर्तमान भौगोलिक नामों के साथ चिन्हित किया गया है। इस प्रयास का उद्देश्य इन स्थलों की भौगोलिक पहचान को स्पष्ट करना तथा कुषाणों की ऐतिहासिक यात्रा को आधुनिक संदर्भों में पुनर्स्थापित करना है। यह अध्ययन प्राचीन और समकालीन स्रोतों के समन्वय से भारतीय उपमहाद्वीप में कुषाण प्रभाव की ऐतिहासिक समझ को और अधिक प्रामाणिकता प्रदान करता है।

परिचय

कुषाणों का भारत आगमन: एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण

कुषाण राजवंश ने ईसा पूर्व के उत्तरार्ध से लेकर ईसा की तीसरी शताब्दी तक भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी भागों एवं मध्य एशिया के व्यापक भू-क्षेत्र पर शासन स्थापित किया। यह राजवंश मूलतः चीन के पश्चिमी भाग से संबद्ध था, और इसका संबंध यू-ची (Yuezhi) नामक एक घुमंतू जनजाति से था।

यू-ची जनजाति का मूल निवास क्षेत्र वर्तमान चीन का पश्चिमी भाग था, जहाँ से विभिन्न आक्रमणों और संघर्षों के चलते इनका विस्थापन हुआ। इस विस्थापन के दौरान यू-ची जनजाति कई उप-गठनों में विभाजित हो गई तथा पश्चिम की ओर प्रस्थान करते हुए किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान, अफगानिस्तान के

काबुल क्षेत्र से होते हुए, वर्तमान पाकिस्तान (जो उस समय भारतीय उपमहाद्वीप का हिस्सा था) में प्रविष्ट हुई।

इस जनजातीय समूह के विभाजन के समय यू-ची समुदाय पाँच प्रमुख शाखाओं में विभक्त हुआ, जिनमें प्रत्येक का नेतृत्व एक पृथक सरदार द्वारा किया जाता था। इन्हीं में से एक शाखा का नेतृत्व 'किऊ-स्वांग' नामक सरदार कर रहा था, जिसने गांधार (वर्तमान में कंधार, अफगानिस्तान) में अपनी सत्ता स्थापित की। उसके नाम पर ही इस शाखा को 'कुषाण' कहा जाने लगा और यही शाखा आगे चलकर कुषाण राजवंश के रूप में विख्यात हुई।

कुषाण शासकों में सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक कनिष्क था, जिसने 78 ईस्वी में राजसिंहासन ग्रहण किया। उसके राज्यारोहण के वर्ष को ही 'शक संवत्' की शुरुआत माना जाता है, जिसे वर्तमान में भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय संवत् के रूप में मान्यता प्राप्त है।

मुख्य बिंदु:

1. **भारत आगमन से पूर्व कुषाणों का प्रवास स्थान:**
   - मूल निवास: पश्चिमी चीन
   - विस्थापन के पश्चात प्रवास: किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान, अफगानिस्तान (काबुल क्षेत्र)
2. **प्रवास स्थलों के प्राचीन एवं आधुनिक नामों का एकीकरण:**

प्राचीन नाम	आधुनिक नाम	वर्तमान स्थिति
गांधार	कंधार (अफगानिस्तान)	दक्षिण-पश्चिम अफगानिस्तान
तोचारिस्तान	बल्ख (अफगानिस्तान)	उत्तरी अफगानिस्तान
तान्झु	शिंजियांग (चीन)	पश्चिमी चीन

3. **वर्तमान स्थैतिक वर्णन-** उपर्युक्त सभी क्षेत्र आज विभिन्न राष्ट्रों के अधीन हैं–पश्चिमी चीन में शिंजियांग, मध्य एशिया में किर्गिस्तान व ताजिकिस्तान, और अफगानिस्तान में कंधार एवं बल्ख–जहाँ यू-ची और कुषाणों के प्रवास व प्रभाव के पुरातात्विक प्रमाण मिलते हैं।
4. **भारत आगमन का मार्ग-** कुषाणों ने पश्चिम चीन से प्रस्थान कर क्रमशः किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान, अफगानिस्तान (काबुल एवं कंधार) होते हुए भारतीय उपमहाद्वीप में प्रवेश किया। यह मार्ग प्राचीन 'सिल्क रूट' (रेशम मार्ग) का एक भाग भी था, जो व्यापार के साथ-साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान का प्रमुख माध्यम रहा।

शोध सामग्री एवं लेखन विधि

प्रस्तुत शोध लेख हेतु सामग्री विभिन्न साहित्यिक, ऐतिहासिक तथा पुरातात्विक स्रोतों से संकलित की गई है। शोध के लिए प्राचीन ग्रंथों, ऐतिहासिक अभिलेखों, आधुनिक इतिहासकारों द्वारा रचित शोध-प्रबंधों तथा संबंधित माध्यम एशियाई और भारतीय इतिहास पर आधारित ग्रंथों का अध्ययन किया गया है। साथ ही, संबंधित स्थलों की भौगोलिक पहचान के लिए ऐटलस, मानचित्रों एवं नवीनतम शोध पत्रिकाओं का भी संदर्भ लिया गया है।

लेखन पद्धति में विवरणात्मक (descriptive) अध्ययन को आधार बनाया गया है, जिसके माध्यम से कुषाणों के आगमन मार्ग, प्रवास स्थलों एवं ऐतिहासिक घटनाक्रमों का क्रमबद्ध विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य तथ्यों का संकलन मात्र नहीं, अपितु ऐतिहासिक तथ्यों के माध्यम से कुषाणों के भारत आगमन की प्रक्रिया को एक समग्र और सुसंगत दृष्टिकोण में प्रस्तुत करना है।

परिणाम एवं विवेचना

कुषाणों की उत्पत्ति मूलतः पश्चिमी चीन की *यू-ची* (Yuezhi) नामक घुमंतू जनजाति से मानी जाती है। ईसा पूर्व 174 से 165 के मध्य यह जनजाति चीन के तुन-ह्वांग और कि-लियन (Tien Shan) पर्वत श्रेणियों के बीच, तुर्किस्तान के दक्षिण-पूर्व स्थित कान्सू (Gansu) प्रांत में निवास कर रही थी। यह जाति एक बंजारावृत्ति पर आधारित, सामूहिक रूप से विचरण करने वाला समुदाय था।

ईसा पूर्व 165 में हूण जाति के नेता *शाशम युलाओ-शेंग* ने यू-ची पर आक्रमण किया। इस संघर्ष में यू-ची पूर्णतः पराजित हुए, और उनके नेता के कपाल से विजेता हूण शासक ने सुरापात्र बनवाया, जिसकी सूचना चीनी सम्राट को भेजी गई। पराजय के पश्चात यू-ची नेता की विधवा ने समुदाय का नेतृत्व संभाला और जनजाति ने पश्चिम की ओर पलायन कर दिया। यहीं से यू-ची दो भागों में विभाजित हो गए: एक *मुख्य यू-ची* और दूसरी *लघु यू-ची*।

लघु यू-ची जनसंख्या में कम होने के कारण तिब्बत के क्षेत्र में बस गई, जबकि मुख्य यू-ची पश्चिम की ओर बढ़ते रहे। इस मार्ग में उनका संघर्ष किर्गिज़स्तान के इसिक-कुल झील क्षेत्र में स्थित *बु-सुन* जनजाति से हुआ, जहाँ बु-सुन का नेता मारा गया। इसके बाद यू-ची ने *सिर दरिया* क्षेत्र (Syr Darya) पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया, जो उस समय शक (साई-रोय) जातियों का निवास क्षेत्र था।

कुछ समय उपरांत मृत बु-सुन नेता के पुत्र ने हूणों की सहायता से यू-ची पर पलटवार किया और शक प्रदेशों पर पुनः अधिकार कर लिया, जिससे यू-ची पुनः पश्चिम की ओर खिसक गए और *अमू दरिया* (Oxus) क्षेत्र में आकर स्थायी रूप से बस गए। इस क्षेत्र के निवासी शांति प्रिय और व्यापारकुशल थे, जिनके मध्य यू-ची ने धीरे-धीरे प्रभाव स्थापित कर *सोघद* (Sogdiana) और *बैक्ट्रिया* (Bactria) तक अपना साम्राज्य विस्तार कर लिया।

यहीं से यू-ची जनजाति ने अपने घुमंतू जीवन को त्यागकर संगठित राजनीतिक सत्ता की ओर अग्रसर होना आरंभ किया। चीनी यात्री *चेंग किएन* ने ई.पू. 128 में बैक्ट्रिया की यात्रा के दौरान स्पष्ट किया कि इस समय इस क्षेत्र में यू-ची जाति का पूर्ण वर्चस्व था, और उन्होंने हाल ही में इस क्षेत्र पर अधिकार किया था। उस समय यहाँ की जनसंख्या लगभग 4 लाख थी।

बैक्ट्रिया पहुँचने के उपरांत यू-ची पाँच प्रमुख सरदारों के नेतृत्व में पाँच शाखाओं में विभाजित हो गए, जिन्हें चीनी स्रोतों में *'हसी-हाऊ'* (Hsih-hou) कहा गया है।

कुषाण सरदारों के नाम एवं उनकी राजधानियाँ

क्रम	कुषाण सरदार का नाम	प्राचीन राजधानी	वर्तमान भौगोलिक स्थिति
1	सिऊ सी	हो-यो	बखान (Bokhan)
2	स्वांग मी	स्वांग मी	चितरल क्षेत्र (अर्थ मैदान)
3	किऊ स्वांग	हु-शाओ	गांधार (वर्तमान NW पाकिस्तान)
4	सी तुन	पो माओ	पंजशीर (Panjshir, अफगानिस्तान)
5	काओ फू	काओ फू	काबुल (Kabul, अफगानिस्तान)

भारतीय ग्रंथों में उल्लेख एवं नामों की व्युत्पत्ति

भारतीय प्राचीन ग्रंथों जैसे *पुराण*, *रामायण* तथा *महाभारत* में कुषाण राजवंश का प्रत्यक्ष उल्लेख नहीं मिलता है, तथापि *तोसारी* नामक एक वंजारा जाति का उल्लेख पश्चिमी स्रोतों में अवश्य होता है, जो संभवतः कुषाणों का ही पर्याय थी। ईसा पूर्व दूसरी सदी में बैक्ट्रिया पर अधिकार करने वाली जातियों में तोसारी को प्रमुख माना गया है, और चीनी विवरणों में भी इस काल में यू-ची जाति को बैक्ट्रिया निवासी बताया गया है। अतः यू-ची और तोसारी को समरूप माना जा सकता है।

भारतीय ग्रंथों में प्रयुक्त *तष्कर*, *तुषार*, *तुखार*, *तुरुष्क* आदि शब्दों को भी यू-ची (कुषाण) जातियों से संबद्ध माना गया है। *कल्हण* ने भी कनिष्क को *तुर्क जाति* का सदस्य माना है। इसी प्रकार *अलबरूनी* ने कनिष्क को तुर्की शाही वंश का पूर्वज बताया है।

इतिहासकार *हॉल्ट्ज़* एवं *कनिंघम* ने कुषाणों को तुर्क जाति से संबंधित बताया है, जिसका आधार *कुजुल कडफिसस* के सिक्कों पर अंकित उपाधियाँ हैं, जिन्हें तुर्की मूल की मानी जाती हैं। जबकि कुछ विद्वान कुषाणों को शक जाति का अंग मानते हैं और तर्क देते हैं कि कुषाण काल में चीनी तुर्कमेनिस्तान में ईरानी भाषिक जातियाँ निवास करती थीं, न कि तुर्क।

काबुल में आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में एक विद्वान ने कुषाणों को हूण जाति से संबंधित माना है। इतिहासकार *रोजेनफील्ड* के अनुसार, भारत आगमन से पूर्व यू-ची जाति का इतिहास तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है:

1. घुमंतू जीवन काल
2. बैक्ट्रिया में स्थायी निवास
3. पाँच सरदारों में विभाजन एवं साम्राज्य विस्तार

सिक्कों से प्राप्त साक्ष्य

प्राप्त एक प्राचीन सिक्के पर *HIAOY* नाम उत्कीर्ण है, जिसे एक प्रारंभिक कुषाण शासक माना गया है। आधुनिक मुद्राशास्त्री इसे *सनब (Sanab)* कहते हैं। इतिहासकार *टार्न* का मत है कि यह शासक संभवतः यूनानी राजा *हरमियस* का सहयोगी रहा होगा और संभवतः *कुजुल कडफिसस* का पिता या कोई पूर्वज था।

सामान्यतः 'कुषाण' शब्द उस समूह के लिए प्रयुक्त होता है, जिसने प्रथम शताब्दी ईस्वी के आसपास पाकिस्तान, अफगानिस्तान और उत्तर-पश्चिम भारत में सत्ता स्थापित की। यह समूह *यू-ची* जनजाति की एक प्रमुख शाखा थी, जिसने स्थायी साम्राज्य की स्थापना कर भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

निष्कर्ष

कुषाण राजवंश का इतिहास केवल एक विदेशी जनजाति के भारत में आगमन की कथा नहीं है, बल्कि यह भारतीय उपमहाद्वीप और मध्य एशिया के बीच राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक अंतःक्रियाओं की महत्त्वपूर्ण कड़ी है। यू-ची जाति के रूप में पश्चिमी चीन से आरंभ हुई इनकी यात्रा, लगातार संघर्षों, विस्थापन और पुनर्संयोजन की प्रक्रिया से होकर बैक्ट्रिया में स्थायित्व और अंततः भारत में साम्राज्य विस्तार तक पहुँचती है।

यह शोध यह प्रमाणित करता है कि कुषाणों का आगमन एक व्यवस्थित ऐतिहासिक प्रक्रिया थी, जिसमें न केवल युद्ध, विस्थापन और सत्ता संघर्ष थे, बल्कि सांस्कृतिक समन्वय और स्थायी शासन व्यवस्था की स्थापना भी प्रमुख थी। पाँच शाखाओं में विभाजित होकर कुषाणों ने राजनीतिक संरचना को सुदृढ़ किया और कनिष्क जैसे सम्राटों के नेतृत्व में एक सुव्यवस्थित साम्राज्य की नींव रखी।

चीनी, पश्चिमी तथा भारतीय स्रोतों की तुलनात्मक विवेचना से यह भी स्पष्ट होता है कि कुषाणों को कभी तुर्क, कभी शक, तो कभी तोसारी अथवा तुषार जाति से जोड़ा गया है, जो इस बात की पुष्टि करता है कि ये जातियाँ भौगोलिक स्थानांतरण और सांस्कृतिक समन्वय की दृष्टि से अत्यधिक गतिशील थीं। कुषाणों के माध्यम से न केवल रेशम मार्ग को सशक्त रूप मिला, बल्कि भारत और मध्य एशिया के मध्य व्यापार, बौद्ध धर्म तथा कलात्मक शैली का आदान-प्रदान भी तीव्र गति से हुआ।

इस प्रकार, कुषाण राजवंश का अध्ययन एक ऐसी ऐतिहासिक यात्रा है जो आधुनिक इतिहास लेखन को बहुस्तरीय दृष्टिकोण प्रदान करता है – जिसमें जातीय उत्पत्ति, प्रवास, संघर्ष, और अंततः एकीकृत साम्राज्य की स्थापना सम्मिलित है।

कुषाणों के भारत आगमन का मार्ग

संक्षिप्त सारणी: मार्ग और क्षेत्रों का विवरण

	दौर मार्ग / क्षेत्र	विवरण
1	पश्चिमी चीन → मध्य एशिया	विस्थापन–यू-ची का Gansu/Xinjiang से Bactria में प्रवेश
2	Bactria → गंधार	Kujula Kadphises द्वारा शक्ति का केंद्रीकरण
3	गंधार → उत्तर भारत	Taxila, Peshawar, Mathura जैसे नगरों पर नियंत्रण
4	गंगा मैदान	Saketa, Sarnath, Pataliputra तक विस्तार
5	तिब्बत / कश्मीर मार्ग	गिलगित, चिलास से कश्मीर घाटी तक पहुँच

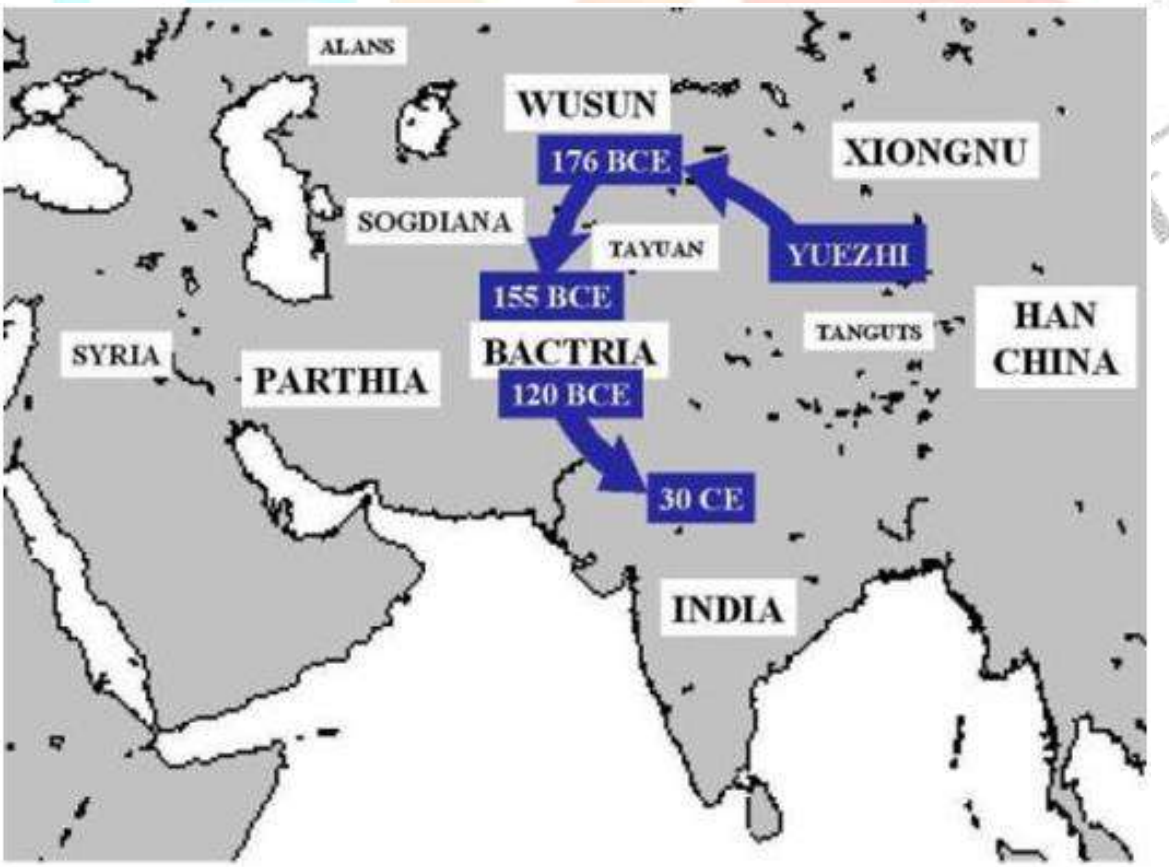

कुषाणों के भारत आगमन का मार्ग

संदर्भ सूची (References/Bibliography)

1. चेंग किएन - *Records of the Grand Historian*
2. टार्न, डब्ल्यू.डब्ल्यू. - *The Greeks in Bactria and India*
3. कनिंघम, अलेक्ज़ेंडर - *The Ancient Geography of India*
4. अलबरूनी - *India by Al-Biruni* (अनुवाद: एडवर्ड सचाउ)
5. कल्हण - *राजतरंगिणी*
6. रोजेनफील्ड, जॉन एम. - *The Dynastic Arts of the Kushans*
7. हॉल्ट्ज़, जॉन - *Studies in Central Asian History*
8. बुद्धिस्ट स्टडीज़ - *Kanishka and the Kushan Empire* (Various authors)
9. पुराण - *विष्णु पुराण, भागवत पुराण इत्यादि*
10. रामायण एवं महाभारत - *संपादित संस्करण, गीताप्रेस गोरखपुर*
11. Indian Historical Quarterly - *Vol. XII, XIII (Chinese Influence in Ancient India)*
12. Proceedings of the Kabul Conference on Central Asian Studies - *1972 Edition*
13. Sir Mortimer Wheeler - *The Indus Civilization*